English

setuu अध्याय 21

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

चिरंजीवी हनुमान जी का शिव धनुष तथा देवी लक्ष्मी के सीता अवतार में किये गए बलिदानों के बारे में वार्तालाप

जब यजमान प्रणव के लिए अर्पण की क्रिया संपन्न हुई , उन्हें हनुमान जी से कुछ प्रसाद के रूप में मांगने का अवसर मिला | अन्य मातंगों की तरह उसने भी उस ब्रह्मज्ञान की इच्छा प्रकट की जो मोक्ष की ओर ले जाता है |

हनुमान जी ने अपना वार्तालाप एक प्रश्न से शुरू किया | उन्होंने पूछा – “हे मातंगो , मैंने आपको भगवान् राम की ताड़का के जंगल में की गई लीला सुनाई | क्या आप बता सकते हो कि प्रभु श्री राम ने ताड़का के किले को ध्वस्त करने के लिए किस शक्ति का प्रयोग किया?

यजमान प्रणव ने तुरंत उत्तर दिया – “शिव योग , प्रभु |”

हनुमान जी को अनुमान था कि यही उत्तर मिलेगा | उन्होंने कहा – “अगर केवल शिव योग की ही आवश्यकता थी तो कोई भी ऋषि ताड़का को हरा सकते थे | ऋषि विश्वामित्र स्वयं महान शिव योगी थे | तो उन्हें युवा राजकुमार राम की आवश्यकता अनुभव क्यों हुई?

उर्मी, एक युवा मातंग महिला , खड़ी हुई और बोली – “हे प्रभु , मुझे लगता है कि ताड़का को हराने में श्री लक्ष्मण जी का महत्वपुर्ण योगदान रहा |” इस पर हनुमान जी इस तरह मुस्कुराये कि उर्मी को लगा कि वे उसकी पीठ थपथपा रहे थे | वह बोली – “लक्षमण एक साधारण मनुष्य की भांति ताड़का के जाल में फंस गए | भगवान् राम ने उनको जाल से निकाला , लेकिन वे अकेले नहीं आये , ताड़का के असली कमजोर रूप को भी साथ लाये | अगर लक्षमण जी नहीं होते तो ताड़का अपने अविजयी राक्षस रूप में ही रहती |”

“वह तो ठीक है , लेकिन वह कौन सी शक्ति है जिसने ताड़का के जंगल को राक्षसी शक्तियों से मुक्त किया?” हनुमान जी उर्मी को बोले और फिर सभी मातंगों को संबोधित किया – “हे मातंगो , आप सभी के दिमाग उत्तर के आस पास डोल रहे हैं लेकिन उसे पकड़ नहीं पा रहे हैं | उत्तर है प्रेम – प्रेम की शक्ति | प्रेम मनुष्यों में इतना स्वाभाविक होता है कि इसके आस पास होने पर भी दिमाग को इसका अहसास नहीं होता , ठीक उसी तरह जैसे मछली समुद्र में रहते हुए भी समुद्र के अस्तित्व से अनभिज्ञ रहती है |

“हाँ – प्रेम |” उर्मी ने अपने दिमाग को कोसते हुए कहा – “मेरा दिमाग बस उत्तर के करीब पहुँचने ही वाला था प्रभु | यह प्रभु राम और लक्ष्मण के बीच का अटूट बंधन ही था जिससे ताड़का का विनाश संभव हो पाया | मेरा दिमाग यह कल्पना करने के लिए असहाय है कि असली ताड़का बुराई के गहरे गड्ढे में छुपी थी | राम जी ने लक्षमण जी को उस गड्ढे में भेजा | जब लक्षमण ने ताड़का को पकड़ लिया तो राम जी ने प्रेम की रस्सी से लक्षमण को अपनी ओर खींच लिया | इस तरह लक्षमण के साथ साथ ताड़का भी उस गड्ढे से बाहर आ गई |”

"यह अच्छी कल्पना है , उर्मी |" हनुमान जी विस्तृत मुस्कान के साथ बोले – "चाहे गड्ढा बुराई का हो , अज्ञान का हो, कर्म का अथवा इच्छा का , अगर कोई गड्ढे में गिरा हुआ है लेकिन उसे कम से कम इतनी चेतना है कि वह गड्ढे के अन्दर भेजी गई ज्ञान रुपी रस्सी को पकड़ ले, तो कोई भी ऋषि उसके गुरु बनकर उसे बाहर निकाल सकते हैं | लेकिन ताड़का जैसी आत्मा जो बुराई के गड्ढे में इतनी अन्दर धंसी हुई थी कि उद्धारक द्वारा अन्दर भेजी गई रस्सी भी उसे नहीं दिख रही थी , तो उद्धारक क्या करे? अपने सहयोगी को गड्ढे के अन्दर भेजे | इसीलिए राम जी ने लक्ष्मण को ताड़का के जाल में जाने दिया | वे इस तथ्य से आश्वस्त थे कि प्रेम की रस्सी उन्हें लक्ष्मण जी के साथ जोडती थी जिसका प्रयोग करके वे कभी भी लक्ष्मण जी को बाहर निकाल सकते थे |

"श्री राम जी और लक्ष्मण जी के प्रेम ने ताड़का के जंगल में कैद आत्माओं का उद्धार किया और राम जी और माता सीता के बीच प्रेम ने पूरे मानवलोक की आत्माओं का उद्धार किया | मैं बताता हूँ कैसे |

"ये वो समय था जब राजा दिन में कुछ समय अपने खेतों में किसान की तरह कार्य करके बिताया करते थे | उस ऋतु मिथिला के राजा जनक के खेतों में इतनी अच्छी फसल हुई कि उन्होंने भूमि को कुछ समय के लिए बिना जोते छोड़ने का फैसला किया | एक सुबह राजा जनक खेतों में उगी अनावश्यक घास को उखाड़ने के लिए हल चला रहे थे कि उनका हल किसी ऐसी चीज में फंस गया जो किसी दूर के पेड़ की जड़ मालुम होती थी | उन्होंने हल को एक तरफ रखा और निरिक्षण के लिए झुके | यह कोई अर्ध-पारदर्शी चिकनी जड़ थी जो समानांतर में फैली थी ; राजा ने ऐसी कोई चीज पहले नहीं देखी थी |

"जिज्ञासा में उन्होंने उस चीज के ऊपर से मिटटी को हटाना शुरू किया , पहले कुछ मीटर दाई तरफ, और जब दाई तरफ कुछ नहीं मिला तो कुछ फूट बाई तरफ और वहां कुछ था : एक अर्ध पारदर्शी तरबूज के आकार की कोई चीज जो आँखों से तो कोई अजीब फल जान पड़ती थी और स्पर्श से किसी विचित्र द्रव से भरा गुब्बारा | यह चीज थी तो गर्म लेकिन इसके स्पर्श से राजा के शरीर में बर्फ सी ठंडी लहर दौड़ गई | जिज्ञासा स्वरुप उन्होंने उस विचित्र फल के आस पास से मिटटी हटाकर उसे पूरी तरह निकालना चाहा लेकिन उनकी सहज प्रवृति ने उनसे बिलकुल विपरीत करवाया : उन्होंने फल का जो उपरी हिस्सा दिख रहा था उस पर भी मिटटी पुनः डाल दी |

"जनक ने अपने पैरों पर खड़े होने का एक असफल प्रयास किया | उनके पैर जैसे जमीन से चिपक गए थे ; उनके हाथ मिटटी पर सावधानी से ऐसे रखे थे जैसे वे अपनी गर्भवती पत्नी के पेट को छूने का स्वपन देख रहे हो |

"जनक के उस सपने को बैलों के गले में पड़ीं घंटियों की आवाज ने छोटा कर दिया | उनके बैल मक्खीयाँ हटाने के लिए सर हिला रहे थे और अपने मालिक द्वारा पुनः जोतना शुरू करने का इन्तजार कर रहे थे | जनक खड़े हुए , हल को बैलों से अलग किया और बैलों को उस स्थान पर ले गए जहाँ उनका घोडा दो सैनिकों की निगरानी में आराम कर रहा था | सैनिकों को वही पर रहने का इशारा करके वे घोड़े पर चढ़े और महल का रुख किया |

"क्या यह मात्र एक संयोग था कि ऋषि विश्वामित्र की अगुवाई में ऋषियों का एक समूह पिछली शाम मिथिला पहुंचा था ? क्या ऐसी विचित्र चीज का खेतों में पाया जाना ऋषियों के आगमन से सम्बंधित था ? राजा जनक का दिमाग घोड़े से भी अधिक गति से दौड़ रहा था | हालाँकि उनका दिमाग किसी मंजिल पर नहीं पहुंचा , उनके घोड़े ने उनको महल के उस अतिथिगृह में पहुंचा दिया जहाँ पर ऋषि ठहरे थे |

""एक फल ऋषिवर ... एक विचित्र फल ..." जनक ऋषि विश्वामित्र को अतिथिगृह के आँगन के नीम के नीचे बैठा देखते ही बडबड़ाये – "एक श्वेत अर्ध पारदर्शी फल ... खेतों में ... मैंने देखा ... गुरुदेव .. कृपा जल्दी मेरे साथ चलकर देखिये ..."

""ऋषि विश्वामित्र चेहरे पर सख्त भाव तथा सादी आवाज में बोले – "शांत हो जाइए , राजन | मुझे अतिथिगृह में जो फल परोसे गए हैं उनसे मैं संतुष्ट हूँ | मुझे इच्छा नहीं है कोई-"

""नहीं ऋषिवर ," जनक बीच में बोल पड़े – "जरूरी नहीं है कि वह फल ही हैं | वह कोई विचित्र चीज है | एक तरबूज के आकार की चीज जिसमे धुंधला सा द्रव भरा है | उसके बीच में एक लाल रंग की सेम के बीज जैसी कोई चीज है | मैंने उसे पूरा खोदकर नहीं देखा यह सोचकर कि कहीं-"

““हाँ हाँ , ठीक है | मैं जानता हूँ आपने क्या देखा है |” ऋषि विश्वामित्र चिडचिडे स्वर में बोले | जनक इस बात से चिंतित थे कि ऋषि विश्वामित्र जो अपने मित्रतापूर्ण स्वभाव के लिए जाने जाते थे , पिछली शाम जब से आये थे अशांत और अस्नेही दिख रहे थे |

“ऋषि विश्वामित्र जानते थे कि जनक द्वारा खोजी गई चीज कोई फल नहीं अपितु देवी लक्ष्मी की होने वाली देह थी जिन्होंने इस प्रकार से अवतार लेने का निर्णय ले लिया था जिससे पूरा ऋषि समाज दुःख में था | देवता भी खुश नहीं थे | एक पखवाड़े पहले ऋषियों और देवताओं की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा था जब भगवान् राम की देह ने देवी कौशल्या के गर्भ में विकसित होना शुरू कर दिया था | ऋषि विश्वामित्र ने वहां भी शुक्राचार्य द्वारा लगाईं गई अडचनों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी | अब देवताओं ने उन्हें नया काम सौंपा था – देवी लक्ष्मी के पृथ्वी पर अवतरण की घटना में सहयोग देना | वे इस कार्य के लिए बिलकुल भी उत्सुक नहीं थे | हे मातंगो , इसका कारण आपको कुछ ही देर में पता चलेगा |”

“ऋषि विश्वामित्र ने अपनी भावनाओं को छुपाया और सौंपे गए कार्य में लग गए | उन्होंने जनक को औपचारिक लहजे में कहा – “हे राजन , ऋषियों का दल यहाँ पर उसी सम्बन्ध में उपस्थित है जिस सम्बन्ध में आपने उस चीज को खेतों में पाया है | हमें एक यज्ञ शुरू करना है जो कई महीनों तक चलेगा | आपकी और रानी सुनयना की उपस्थिति की आवश्यकता समय समय पर पड़ेगी | आज यज्ञ के आरम्भ में भी आप दोनों की उपस्थिति अनिवार्य है | यज्ञ उसी स्थान पर होगा जहाँ आपको वह चीज मिली है | जाओ स्नान करो और देवी सुनयना को अपने साथ लाओ | हमने कल आपके प्रधानमंत्री को यज्ञ के लिए आवश्यक चीजो की एक सूचि सौंपी थी | उन सभी चीजो को यज्ञ के स्थान पर पहुंचवा दो |”

“करीब एक घंटे बाद ऋषि विश्वामित्र महल से बाहर निकल रहे थे , उनके दाई तरफ थे राजा और बाई तरफ रानी और पीछे 11 अन्य ऋषि | रानी के सिर पर एक घड़ा था जिसके ऊपर एक लाल रंग का धागा बंधा हुआ था | उस धागे का एक छोर ऋषि विश्वामित्र के दाए हाथ में था और उनके बाए हाथ में था एक श्वेत रंग के धागे का छोर जो उस फूल पत्तों की टोकरी से लिपटा था जिसे राजा ले जा रहे थे |

“सभी नंगे पैर खेतों की तरफ चल रहे थे | ऋषि विश्वामित्र ने यज्ञ के बारे में जानकारी तथा निर्देश देने के लिए यह समय उपयुक्त समझा | वे शांत ढंग से बोले – “हे विदेह के राजा और रानी , आपका ज्ञान ऋषियों समान है | आप जानते हैं कि कल्प के अंत में पूरी धरती पिंघल जाती है | फिर धरातल के कुछ किलोमीटर ऊपर एक परत का निर्माण होता है जिसमे धरती के सभी नकारात्मक तत्व कैद हो जाते है | सकारात्मक तत्वों से कठोर धरती का निर्माण होता है और सतयुग शुरू होता है | शुरुआत में निर्जीव से जीव उत्पन्न होते हैं , देहे धरती से अपने आप बनती हैं | अर्थात शुरूआती देहो का जन्म धरती से होता है …”

“राजा जनक का दिमाग तेज था | उन्होंने तुरंत अनुमान लगाया – “ऋषिवर क्या आप ये कहने जा रहे हैं कि जो चीज मैंने खेतों में देखि है वो कोई फल नहीं बल्कि एक देह है? एक जिन्दा देह ? धरती ने किसी जीव को जन्म दिया है ?”

““एक मानव को , जनक | धरती ने एक मानव को जन्म दिया है – एक महिला मानव को |” विश्वामित्र सीधे मुद्दे पर आये |

““कौन है ये दुखी आत्मा , ऋषिवर?” हाँ मातंगो , बिलकुल यही थे राजा जनक के शब्द | वे आगे बोले – “अगर कोई आत्मा इस तरह से जन्म ले रही है तो अवश्य ही उसके बहुत बुरे संचित कर्म हैं | और ये जन्म संभव भी कैसे हो सकता है ? आत्मा के प्रवेश करने से पहले ही बुरे कर्म देह का विनाश कर देंगे | मुझे तो यह असंभव लगता है कि वह आत्मा किसी भूमि जनित देह से जीवन शुरू कर पाए |”

“ऋषि विश्वामित्र को यह जाहिर करने की अनुमति नहीं थी कि वह कोई दुखी आत्मा नहीं अपितु देवी लक्ष्मी स्वयं जन्म ले रही थी | उन्होंने गहरी सांस ली और कहा – “हे विदेह के राजा ,यह एक नेक आत्मा है जो मानव जाति के कल्याण के लिए ऐसे जन्म ले रही है | इस समय मैं केवल इतना ही बता सकता हूँ | कर्म के नियमों के अनुसार यह असंभव जान पड़ता है | लेकिन एक कारण है जिसके चलते इस आत्मा ने मिथिला के महल को अपना घर चुना है | आपके महल में एक ऐसी चीज है जो यह संभव करेगी | मैं इस जन्म को संभव बनाने के लिए ही यहाँ हूँ |”

"जनक़ को कर्म के नियम अच्छे से मालुम थे | वे जानते थे कि अगर किसी भली आत्मा ने इस तरह जन्म लेने का निर्णय लिया था तो वह कोई देवी ही हो सकती थी | लेकिन उन्होंने उस आत्मा के बारे में ज्यादा जानने के लिए जिद करना ठीक नहीं समझा | उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखा , दोनों ने मन ही मन कुछ बात की और उनकी उस आत्मा के बारे में जिज्ञासा ख़त्म हो गई |

"हे मातांगो , संक्षिप्त में बताऊं तो , देवी लक्ष्मी ने भूमि से जन्म लेकर धरती की सभी आत्माओं के कर्मों को अपने ऊपर ले लिया था | जाहिर सी बात थी कि उस समय बुरे कर्म अच्छे कर्मों से कही ज्यादा थे | अर्थात उन्होंने पूरी धरती के बुरे कर्मों को अपने ऊपर ले लिया था | उन बुरे कर्मों का विनाश करने से ही धरती पर रह रही आत्माओं की पीडाए कम हो सकती थी | दो तरह के बुरे कर्म होते हैं – विकर्म और कुकर्म | विकर्म को अच्छे कर्मों से ख़त्म किया जा सकता है लेकिन कुकर्म के लिए पीड़ा झेलनी ही पड़ती है | देवी लक्ष्मी ने पूरी धरती के कुकर्मों के लिए पीड़ा झेलने का निर्णय ले लिया था | हाँ ... उन्होंने पीड़ा ... झेली ... पूरी मानवजाती के लिए ... माता सीता ने पीडाएं झेली ... हे मातंगो ... पीड़ा झेली ..."

"हनुमान जी चुप हो गए | भावना ने उनका गला रुंध दिया था | हनुमंडल में अत्यधिक तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया | मातंग महिलाओं की आँखें नम हो गई थी और कभी भी उनका रोना निकल सकता था | हनुमान जी ने स्वयं को संभाला, गहरी सांस ली और बोले – "भावनाए नश्वर प्राणियों की विशेषता है | भावनाएं आत्मा को काल-अस्तित्व के जाल में बाँध देती है | मुझे भावनाओं से दूर रहना पड़ता है अन्यथा ये मुझे कमजोर करती हैं | मुझे काल-अस्तित्व से एक छोटा सा अंतराल लेने की आवश्यकता है |"

बाबा मातंग खड़े हुए , यजमान प्रणव की ओर इशारा किया और अगले ही क्षण यजमान प्रणव जमीन पर साष्टांग प्रणाम कर रहे थे , उनका माथा हनुमान जी के चरणों में था | हनुमान जी ने आँखें बंद की और हनुमंडल से अंतर्ध्यान हो गए | यजमान प्रणव की देह उसी स्थान पर शिथिल अवस्था में थी | वह शायद अचेत हो गया था और उसकी आत्मा किसी अन्य लोक में पहुँच गई थी – शायद स्वपनलोक में |

उसने देखा कि वह अपने हाथ में किसी मोटी रस्सी का एक सिरा पकडे हुए था , रस्सी अनंत तक फैली हुई थी | उसने अपने हाथ को झटका दिया जिससे रस्सी में एक तरंग पैदा हुई जो उससे दूर की दिशा में चली गई | कई साल बीत गए | अब वह वृद्ध पुरुष था किन्तु उस रस्सी का छोर अब भी उसके हाथ में था | उसे आभास हुआ कि जो तरंग उसने रस्सी में पैदा की थी , वह बहुत दूर तक रस्सी में चली और किसी बाधा से टकराकर वापिस लौट आई , उसकी ओर | उसे डर था कि वह तरंग अब कई गुना शक्तिशाली होकर लौट रही थी और उसकी मृत्यु का कारण बनने वाली थी | वह बचकर कही नहीं जा सकता था | तरंग आई और उससे टकराई | उसकी मृत्यु हुई या नहीं यह तो पता नहीं चला लेकिन उसका सपना टूट गया | वह हनुमंडल में हलकी सी भयजनित कराहट के साथ जागा |

उसका माथा अब भी हनुमान जी के चरणों को छू रहा था | वे अंतराल के बाद वापिस आ गए थे | हनुमान जी ने उसको खड़ा किया , अपनी मुस्कान से उसमे एक नई जान ला दी और उसे उसकी निर्धारित जगह पर जाने का इशारा किया |

"कर्म क्या है?" हनुमान जी ने अपना वार्तालाप एक प्रश्न से पुनः आरम्भ किया | उत्तर भी उन्होंने ही दिया – "आप सब एक धागों के जाल में हैं – समय के धागे | किसी भी बिंदु पर आप 7 अथवा उससे अधिक समय के धागों पर होते हैं | जब आप कुछ कार्य करते हैं तो आप उन धागों में तरंगे पैदा करते हैं | इन तरंगो में इस बात की जानकारी कैद होती है कि आपने क्या किया | ये तरंगे आपके कर्म हैं और आपके जीवन में उतार चढ़ाव के लिए जिम्मेदार है |

"कल्पना करो कि आपके समय के धागे किसी अन्य के समय के धागों के साथ उलझे हुए हैं | जिसके साथ आपके समय के धागे उलझे हैं वह आपका "कर्म-सम्बन्धी' है | कोई भी मनुष्य जिसके साथ आपका किसी भी तरह का जुड़ाव है , आपका कर्म सम्बन्धी है | यहाँ यह उल्लेख करना उचित है कि प्रेम तथा घृणा दोनों जुड़ाव हैं | जिस मनुष्य से आप घृणा करते हैं वह आपका उतना ही कर्म-सम्बन्धी है जितना कि वो जिससे आप प्रेम करते हैं |

"आपके समय के धागों में जो तरंगे पैदा होती हैं वे आपके कर्म-सम्बन्धी के समय के धागों में तरंगे पैदा करती हैं , और इसका विपरीत भी सत्य है | अर्थात आपके कर्म आपके कर्म-सम्बन्धी के कर्मो को प्रभावित करते हैं | और उसका उल्टा भी सत्य है | अब आपके दिमाग में यह विचार आ रहा होगा – "मैं जिससे प्रेम अर्थात घृणा करता हूँ , उसके कर्म मुझे प्रभावित क्यों करें? यह तो अन्याय है|" आपको अपने दिमाग को समझाना होगा कि आपके कर्म ही यह निर्धारित करते हैं कि आप किससे प्रेम करें और किससे घृणा | दुसरे शब्दों में , ये आपके कर्म ही हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि

किसके कर्म आपको प्रभावित करें और किसके नहीं | यह पूर्णतः न्यायसंगत है | अगर आप नहीं चाहते कि किसी के कर्म आपको प्रभावित करें , तो आप निरासक्त हो जाइये |

"आपकी आत्मा यह नहीं चुन सकती कि वह किस परिवार में जन्म ले | ये आपके कर्म निर्धारित करते हैं कि आप किसी राजा के घर जन्म लेते हैं अथवा रंक के घर | लेकिन देवी लक्ष्मी के पास विकल्प हैं | वे धरती पर आने के लिए कर्मों का कोई भी सम्मिश्रण चुन सकती है | जब वे माता सीता के रूप में आई तो उन्होंने पूरे संसार की आत्माओं के कर्मों को सहन करना चुना ताकि वे उनके बुरे कर्मों को नष्ट कर सकती | भूमिपुत्री बनकर उन्होंने संसार की सभी आत्माओं को अपना कर्म-सम्बन्धी बना लिया था |

"हे मातांगो , मैं देख सकता हूँ कि आप में से कईयों के मन में यह प्रश्न है – 'देवी लक्ष्मी आखिर दूसरों के बुरे कर्म क्यों सहे?' इसका उत्तर है 'पाप का दुष्चक्र'| जब कोई पाप करता है तो उसे कष्ट झेलना पड़ता है और जब वह कष्ट झेलता है तो और भी पाप करता है | यह क्रम चलता रहता है | कल्पना करो कि किसी मनुष्य ने कुछ चुराया | कर्म ने उसे दंड दिया कि वह भूखा रहेगा | लकिन जब वह भूखा होगा तो खाने के लिए चोरी करने की कोशिश करेगा जिससे उसके कर्म-खाते में और भी बुरे कर्म जुड़ जायेंगे | यह दुष्चक्र है | इस दुष्चक्र को अगर न रोका जाए तो पाप बड़ी तेजी से बढ़ते हैं और विश्व अंतिम विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता है |

"रावण का ही उदाहरण ले लीजिये | वह पाप के दुष्चक्र में फंस गया था | उसकी देह को मारकर समस्या ख़त्म नहीं होने वाली थी | उसकी वह देह चली जाती तो वह अगला जन्म लेकर फिर से पाप करना शुरू कर देता | किसी भली आत्मा द्वारा उसके कुकर्मों का नष्ट किया जाना आवश्यक था | उसके बुरे कर्मों के लिए किसी अन्य को कष्ट झेलना अनिवार्य था | विष्णुलोक में ऐसी बहुत सी भली आत्माए हैं जो ऐसा करने के लिए तत्पर रहती हैं | वे दुष्ट आत्माओं के 'कर्म-सम्बन्धी' बनकर संसार में आती है और उनके किये कर्मों की सजा भुगतती हैं | जब वे सजा भुगतती हैं उस दौरान कोई और बुरा कार्य नहीं करती जिससे कि पाप का दुष्चक्र टूट जाता है |

"हाँ , यह सही है कि धरती से पाप का दुष्चक्र तोडना जरूरी था | लेकिन देवी लक्ष्मी को सभी कुकर्म अपने ऊपर लेने की आवश्यकता नहीं थी | विष्णुलोक में ऐसी हजारों आत्माएं है तो मिलकर यह कार्य कर सकती थी | ऋषि ,देवता और स्वयं भगवान् विष्णु भी वैसा करने के ही पक्षधर थे | देवी लक्ष्मी ने सबकी राय के विपरीत जन्म लिया और वे पृथ्वी की सभी आत्माओं की कर्म-सम्बन्धी बन गई |

"हे मातांगो , कल्पना करो कि दो लड़कियां जंगल में भटक गई है और आस पास कही पानी नहीं है | एक राजकुमारी है जिसने पहले कभी किसी चीज की कमी का अनुभव नहीं किया है और दूसरी है एक गरीब वनवासी की बेटी जिसे लम्बे समय तक प्यासे रहने की आदत है | वे दोनों अपने बुरे कर्मों के कारण इस परिस्थिति में फंस गई हैं | आप ये सोचोगे कि , चूँकि दोनों एक ही प्रतिकूल परिस्थिति में फंसी हैं , तो दोनों किसी एक जैसे बुरे कर्म की सजा भुगत रही हैं | लेकिन ऐसा निष्कर्ष गलत होगा | परिस्थिति की अनुकूलता बराबर है , लेकिन राजकुमारी की पीड़ा दूसरी लड़की से अधिक है | इसलिए राजकुमारी को दूसरी लड़की के मुकाबले किसी बड़े कुकर्म की सजा मिल रही है |

"देवी लक्ष्मी जो सम्पति , सुख , सुन्दरता , भाग्य , भरपूरता तथा विश्व की अन्य सकारात्मक चीजों की स्वयं प्रतिमूर्ति हैं , उन्होंने माता सीता के रूप में अपना अधिकतर जीवन जंगल में बिताया | देवी लक्ष्मी द्वारा एक पल के लिए जंगल की कठिनाइयों को झेलना किसी अन्य आत्मा के द्वारा हजार साल तक नरक की अग्नि में जलने के बराबर है | आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि सभी पीडाएं अपने ऊपर लेकर उन्होंने कितनी बड़ी मात्रा में कुकर्मों का खात्मा किया |" बाबा मातंग ने देखा कि हनुमान जी पुनः भावुक हो रहे थे | उन्होंने यजमान की ओर इशारा किया कि वो साष्टांग प्रणाम की क्रिया के लिए तैयार रहे |

हनुमान जी रुंधे गले से आगे बोले – "जब भी माता सीता के कोमल पैरों में कोई काँटा चुभा, उन्हें वो पीड़ा हुई जो किसी साधारण आत्मा को तब होती हैं जब उसकी देह के अंगों को बुरी तरह काटा जाए |

"जब भी किसी निषाद ने उन्हें गाली दी और उनके चरित्र पर सवाल उठाये , उन्हें वो पीड़ा हुई जो किसी साधारण आत्मा को तब होती है जब उसकी देह को जिन्दा जला दिया जाए |

"भगवान् राम से जुदा होकर बिताये एक पल में उन्हें वो पीड़ा हुई जो किसी साधारण आत्मा को तब होती हैं जब उसकी देह को कोई राक्षस ज़िंदा खा जाए |" हनुमान जी के चेहरे पर एक आंसू लुढ़क आया था | ऐसा लगा जैसे वे सिसकियाँ भरकर रोने वाले हों | भावनाएं उन्हें काल-अस्तित्व की पकड़ में ले जा रही थी | उनकी अनश्वरता खतरे में थी | यजमान प्रणव तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हुआ और हनुमान जी की ओर भ्रमित अवस्था में आगे बढ़ा | इससे पहले कि वह उनके चरणों तक पहुँच पाता , वे अंतर्ध्यान हो गए |

"चूँकि यजमान हनुमान जी के अंतर्ध्यान होते समय उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम की क्रिया नहीं कर पाए थे, बाबा मातंग को वे सभी कर्मकाण्ड पुनः करने पड़े जो चरणपूजा के किसी भी सत्र के शुरू में करने होते हैं | जब हनुमान जी पुनः प्रकट हुए , वे पूर्णतः शांत और स्थिर थे |

"हम कहाँ थे?" उन्होंने अपना वार्तालाप पुनः शुरू किया – "हाँ – राजा जनक , देवी सुनयना और ऋषिगण खेतों में उस स्थान की ओर जा रहे थे जहाँ एक विचित्र चीज देखी गई थी | राजा को आभास था कि कुछ बहुत बड़ा होने जा रहा था | इस सम्बन्ध में और जानकारी हासिल करने के उद्देश्य से उन्होंने प्रश्न किया – "ऋषिवर , धरा पर रह रही सभी आत्माओं के कुल पाप कर्म की मात्रा की कल्पना करना भी मुश्किल है | यह आत्मा इतना सब कैसे सहन करेगी?"

"ऋषि विश्वामित्र शांति से बोले – "हे जनक , जैसा कि तुम जानते हो कि बुरे कर्म दो तरह के होते हैं – विकर्म और कुकर्म | विकर्म इस आत्मा के आत्मीय मित्र द्वारा नष्ट हो जायेंगे और कुकर्मों के लिए इस आत्मा ने कष्ट स्वयं सहने का निर्णय लिया है |"

"हे मातंगो , जब दो आत्मीय मित्र मिलते हैं तो उनके विकर्म एक दुसरे के अच्छे कर्मों के द्वारा नष्ट हो जाते हैं | भगवान् राम ने इतने अच्छे कर्मों को धारण करके जन्म लिया था कि वे माता सीता द्वारा धारण किये गए सभी विकर्मों को नष्ट करने के लिए पर्याप्त थे |

"अब मैं चाहता हूँ कि आप उस गड्ढे वाले उदाहरण को पुनः दिमाग में लायें | संसार की आत्माएं बुरे कर्मों के गड्ढे में फंसी थी | भगवान् विष्णु गड्ढे के बाहर उन सबको बाहर निकालने के लिए तैयार थे , लेकिन वे आत्माएं इतनी अज्ञानी थी कि भगवान् विष्णु द्वारा भेजी गई रस्सी को पहचान नहीं पा रही थी | देवी लक्ष्मी ने उस गड्ढे में उतरने का निर्णय लिया | भगवान् विष्णु ने उनको गड्ढे से बाहर निकाल लिया क्योंकि वे देवी लक्ष्मी से प्रेम की रस्सी से जुड़े थे | और देवी लक्ष्मी संसार की अन्य आत्माओं से जुड़ गई थी ; इसलिए जब वे बाहर आई तो अन्य आत्माएं भी उनके साथ बाहर आ गई |

"जनक को समझ आया कि अगर उस कन्या ने पूरी धरा के बुरे कर्मो को धारण कर लिया था तो उनके आत्मीय मित्र भगवान् विष्णु ही हो सकते थे ; और वह कन्या देवी लक्ष्मी ही हो सकती थी | किसी साधारण राजा को यह पता चलता तो उसके उत्साह का ठिकाना नहीं रहता , लेकिन वे जनक थे जिनका ज्ञान – या कहें कि सैधांतिक ज्ञान – ऋषियों के समान था | वे शांत आवाज में बोले – "लेकिन ऋषिवर, यह कन्या तब तक अपने आत्मीय मित्र से नहीं मिल सकती जब तक कि वह व्यस्क नहीं हो जाती | मुझे डर है कि बुरे कर्मों के कारण इस कन्या की देह व्यस्क होने से पहले ही मर जायेगी | जब तक की वह अपने आत्मीय मित्र से नहीं मिल जाती , तब तक उसकी रक्षा कौन करेगा ? अगर उसकी रक्षा नहीं की गई तो उसकी देह आत्मा के प्रवेश करते ही मर जायेगी|"

"ऋषि विश्वामित्र फुसफुसाए – "आपके महल में कुछ है जो उसकी रक्षा करेगा|"

"जनक ने इस फुसफुसाहट के रूप में आये उत्तर से यह निष्कर्ष निकाला कि उन्हें इस सम्बन्ध में तब तक बात नहीं करनी चाहिए जब तक कि ऋषि विश्वामित्र स्वयं जिक्र न छेड़ें | उन्होंने बिना कोई और प्रश्न किये आगे की रीतियों को निभाया | ऋषियों के आदेश से उन्होंने खेतों में तम्बू लगवा दिए ताकि ऋषि वहां रह सकें , क्योंकि यज्ञ अगले 6 महीने तक लगातार चलने वाला था |

"कर्मकाण्ड निभाने और ऋषियों के लिए व्यवस्थाएं करने के पश्चात् वे अंतत शाम को अपने कक्ष में लौटे | उनकी देह थकी थी किन्तु मन जिज्ञासा के घोड़ों पर सवार था | उनके महल में ऐसा क्या था जिससे वह चमत्कारी कन्या बुरे कर्मों के प्रभाव से बची रह सकती थी ? वे जानते थे कि इंद्र देव सुख-दुःख, हर्ष-शोक आदि का वितरण आत्मा के कर्मों के अनुसार करते हैं | इंद्र को वैसा करने से रोकने के कई तरीके ऋषि सुझाते हैं | उदाहरंतः अगर कोई आत्मा भगवान् शिव से जुडी हो तो उस आत्मा को इंद्र तब तक कोई दुःख प्रदान नहीं कर सकते जब तक कि उस आत्मा का शिव से संपर्क न टूट जाए | क्या भगवान् शिव उस कन्या की रक्षा करने वाले थे ?

"लेकिन एक छोटी बच्ची भगवान् शिव से संपर्क कैसे बना सकती थी , ऐसा करने के लिए कड़ी तपस्या जो करनी पड़ती है | जब उन्हें उत्तर सुझा तो उनके पेट में हलचल हुई | हाँ , एक चीज थी उनके महल में – एक धनुष जिसमे जनक परिवार की किसी भी आत्मा को तुरंत शिव से जोड़ने की शक्ति थी | यह धनुष उनके परिवार की विरासत थी जिसे वे बिलकुल भूल चुके थे | बचपन में ही उनके गुरु ने आगाह किया था कि धनुष का प्रयोग केवल बहुत आवश्यकता पड़ने पर ही किया जाए | उन्हें कभी आवश्यकता नहीं पड़ी थी |

"जिस कक्ष में उनके परिवार की धरोहरें रखी थी वह कक्ष उनके कक्ष के बगल में ही था | उन्हें वह धनुष देखने की तीव्र इच्छा हुई | उन्हें उस कक्ष का ताला खोलने में 10 मिनट और फिर वह संदूक खोलने में अन्य 10 मिनट लगे जिसमे धनुष रखा था | उन्होंने धनुष को निकालकर दिवार से सटी एक मेज पर रख दिया | ऊपर दीवार से उनके पूर्वजो की तस्वीरें उनकी ओर मुस्कुरा रही थी |

"धनुष की डोरी कसी हुई थी | उन्होंने धनुष को अपने माथे से छूकर प्रणाम किया और एक मन्त्र मन ही मन जपा | धनुष की डोरी इतनी ढीली हो गई कि उन्होंने उसे आराम से एक छोर से खोल दिया | अब उन्होंने उस खुले हुए रस्सी के छोर को अपने माथे के बीच लगाकर एक मंत्र जपा |

"उनके मन में पूर्ण भयमुक्तता की भावना आ गई जो इस बात का संकेत थी कि वे अब किसी भी बुरे कर्म के प्रभाव से सुरक्षित हो गए थे | जब तक कि धनुष की डोरी का एक छोर खुला था वे सुरक्षित थे | अगर उनके खाते में कोई पीड़ा लिखी थी तो इंद्र को वह पीड़ा उन्हें देने के लिए तब तक इन्तजार करना पड़ता जब तक कि डोरी का एक छोर खुला था | और उस रस्सी के छोर को या तो केवल वे स्वयं बाँध सकते थे अथवा कोई वो जो धनुष के स्थान पर उनके रक्षक का स्थान लेता | अर्थात वे जब तक चाहते , सुरक्षित थे |

"उन्होंने आनंद अनुभव हुआ यह सोचकर कि वे पूरे जीवन कष्टों से मुक्त रह सकते थे | लेकिन फिर यह तथ्य उनको ध्यान आया कि धनुष की रक्षा केवल कष्ट को आगे बढ़ा सकती थी , जो कर्म उस कष्ट के लिए जिम्मेदार है , उसको नष्ट नहीं कर सकती थी | अगर इस जन्म वे कर्मों के प्रहार से इस धनुष के कारण बच जाते तो अगले जन्म में प्रहार होता | यही कारण था कि उन्हें कभी इस धनुष का प्रयोग करने की नहीं सूझी | उनका उद्देश्य मोक्ष था जो केवल कर्मों के नष्ट करने से मिल सकता था , उनके फल को आगे स्थगित करने से नहीं |

"उन्होंने धनुष को उठाया और डोरी का खुला छोर वापिस बांधकर रक्षा को समाप्त कर दिया | उन्होंने धनुष को वापिस उसके संदूक में रख दिया और अपने कक्ष में लौट आये जहाँ सुकून की नींद उनका इन्तजार कर रही थी |

"देवी सीता के जन्म का यज्ञ पहले 6 महीने खेत में चला और उसके बाद महल में स्थानांतरित कर दिया गया | राजा जनक ने देखा कि उन्हें 6 महीने पहले जो फल खेतों में दिखा था वह अब द्रव के गुब्बारे में तब्दील हो गया था जिसके अन्दर एक मानव शिशु को देखा जा सकता था | जो जड़ जैसी अर्ध-पारदर्शी चीज उस फल से जुडी हुई थी अब वह भूरे रंग की रस्सी जैसी दिख रही थी | अगले एक महीने तक यज्ञ महल के केंद्र में स्थित आँगन में चला जहाँ शिव धनुष भी लाकर रख दिया गया था | यह आँगन किसी झील के आकार का था और छत से इस प्रकार ढका था कि प्राकृतिक प्रकाश प्रवेश कर सके |

"जब ऋषियों को यह विश्वास हो गया कि धनुष शिशु की रक्षा कर रहा था , तो उन्होंने उसको राजा -रानी के हवाले कर दिया | ऋषि विश्वामित्र ने घोषणा की – "हे जनक , हे सुनयना , यह कन्या तब तक सुरक्षित रहेगी जब तक की धनुष की डोरी एक तरफ से खुली है | इस डोरी को या तो ये स्वयं बाँध सकती है और या इसका आत्मीय मित्र | सही समय पर इसका आत्मीय मित्र यहाँ आएगा और इस डोरी को बांधेगा | उसके बाद यह कन्या आपके महल से चली जायेगी अपने जीवन का उद्देश्य सफल करने |" हनुमान जी ने वार्तालाप को विराम दिया |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
535122	Rs. 108	Successful	22/11/2016 - 11:16

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print